B.ed 1st year Paper-C2 - Unit-3

* सर सैय्यद अहमद खान *

सर सैय्यद अहमद खान

सर सैय्यद अहमद खान हिन्दुस्तानी शिक्षक और नेता थे उन्होंने भारत के मुसलमानों के लिए आधुनिक शिक्षा की शुरुआत की। उन्होंने मुहम्मद एंग्लो - ओरिएण्टल कॉलेज की स्थापना की जो बाद में विकसित होकर अलीगढ़ मुस्लिम विश्व-विद्यालय बना। सर सैय्यद अहमद खान ईस्ट इंडिया कम्पनी में काम करते हुए काफी प्रसिद्ध हुए। उन्होंने प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के विषय में एक किताब लिखी : असबाब-ए-बगावत-ए-हिन्द, जिसमें उन्होंने ब्रिटिश सरकार की नीतियों की आलोचना की। वे अपने समय के सबसे प्रभावशाली मुस्लिम नेता थे। उन्होंने उर्दू को भारतीय मुसलमानों की सामुहिक भाषा बनाने पर जोर दिया।

सैय्यद अहमद खाँ का जन्म 17 अक्टूबर 1817 में दिल्ली के सादात (सैय्यद) खानदान में हुआ था। उन्हें बचपन से ही पढ़ने-लिखने का शौक था और उन पर पिता की तुलना में माँ का विशेष प्रभाव था उन्होंने 1838 ई० में ईस्ट इंडिया कंपनी में लिपिक के पद पर काम करना शुरु किया, किंतु 1841 ई० में मैनपुरी में उच्च-न्यायाधीश की योग्यता हासिल की और विभिन्न संस्थानों पर न्यायिक

विभागों में काम किया।

संस्थानों की स्थापना

सर सैय्यद अहमद खान ने निम्नलिखित संस्थानों की स्थापना की थी :-

- 1858 में उन्होंने मुरादाबाद में आधुनिक मदरसे की स्थापना की
- 1863 में एक आधुनिक स्कूल की स्थापना की
- उन्होंने Scientific Society की स्थापना की, जिसमें कई पुस्तकों का अनुवाद प्रकाशित किया एवं उर्दू तथा अंग्रेजी में द्विभाषी पत्रिका निकाली।
- उन्होंने 1886 में All India Muhmandan Education centre का गठन किया, जिसमें वार्षिक सम्मेलन मुसलमानों में शिक्षा को बढ़ावा देने तथा उन्हें एक साझा मंच उपलब्ध कराने के लिए विभिन्न स्थानों पर आयोजित किया जाते थे।
- 1906 में अखिल भारतीय मुस्लिम लीग की स्थापना की जो उस समय तक भारतीय इस्लाम का प्रमुख राजनीतिक केन्द्र था।
- मई 1875 में उन्होंने अलीगढ़ में 'मदरसतुल उलूम' एक मुस्लिम स्कूल स्थापित किया और 1876 में सेवानिवृत्ति के बाद उन्होंने इसे कॉलेज में ~~बुनियाद~~ बदलने की बुनियाद रखी।

प्रमुख पुस्तके

1) अतहर अ़सनादीद (उर्दू 1847)
2) पैगम्बर मोहम्मद साहब के जीवन पर लेख (उर्दू 1870)
3) बाइबिल व कुरान पर टिप्पणी (उर्दू)
4) असबाबे बगावते हिंद (उर्दू 1859)
5) आसारुस्सनादीद

देशभक्त एसोसियेशन और ऐंग्लो - ओरियन्टल डिफेन्स एसोसियेशन की स्थापना — इसके पश्चात सर सैय्यद अहमद खाँ ने बनारस के राजा शिवप्रसाद सेसिमर देशभक्त ~~एसोशियेश~~ एसोशियेशन की स्थापना की। इस संस्था का स्वरूप था अंग्रेज परस्त और प्रतिक्रियावादी। यह ~~कांग्रेस~~ कांग्रेस के प्रत्येक प्रगतिशील कदम का विरोध करती थी और उसे एक विद्रोही संस्था कहकर पुकारती थी।

ज्योतिबा फूले (ज्योति राव गोविन्द राव फुले)

ज्योतिराव गोविन्दराव फूले, के नाम से प्रचलित 19वीं सदी के एक महान भारतीय विचारक, समाजसेवी, लेखक, दार्शनिक तथा क्रांतिकारी कार्यकर्ता थे। महात्मा ज्योतिबा फूले का जन्म 1827 ई० में पूणे में हुआ था। यद्यपि इनके जन्म के संदर्भ में कोई तिथि विद्वानों द्वारा एक मत रूप से तय नहीं हो सकी है। वे माली परिवार से संबंध रखते थे। ज्योतिबा फूले ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा एक स्थानीय मराठी विद्यालय में प्राप्त की। 1847 में इन्होंने Scottish मिशन स्कूल से हाई स्कूल की परीक्षा उतीर्ण की। सन् 1840 में उनका विवाह पढ़ाई के दौरान सावित्री बाई के साथ सम्पन्न हुआ। उन्होंने भारतीय समाज में फैली अनेक कुरीतियों को दूर करने का सतत संघर्ष किया। उस समय समाज में वर्ग भेद अपनी चरम सिमा पर था। स्त्री और दलित वर्ग की दशा अच्छी नहीं थी उन्हें शिक्षा से वंचित रखा जाता था जिससे ज्योतिबा फूले को बड़ा दुख होता था, उन्होंने स्त्री और दलितों में शिक्षा के लिए समाजिक संघर्ष का बिड़ा उठाया। उनका मानना था कि, "माताएँ जो संस्कार बच्चों में डालती है उसी में उन बच्चों के भविष्य के बीज होते है।"

ज्योतिबाफूले का दर्शन

ज्योतिबाफूले ने शिक्षा को महत्वपूर्ण बताते हुए समाज के अंधकार को शिक्षा के प्रकाश को चारों ओर फैलाने में सहयोग दिया। इन्होंने अपनी पत्नि को पढ़ने के लिए प्रेरित किया तथा आगे चलकर वे भारत के प्रथम प्रशिक्षित शिक्षक महिला बनी। 1848 में उन्होंने स्त्री शिक्षा के लिए प्रथम बालिका विद्यालय की स्थापना की, जो आगे चलकर धन के आभाव में बंद हो गया। 1851 में उन्होंने एक बड़ा कन्या विद्यालय की स्थापना की जिसमें उन्होंने स्वयं शिक्षण किया। उन्होंने बाल-विवाह का विरोध किया तथा विद्रोह के बाद विधवा विवाह का समर्थन किया और उन्होंने अस्पृश्यता का भी विद्रोह किया। वे स्वयं दलित वर्ग से संबंधित थे फिर भी उनके गृह के द्वार सभी के लिए सदैव खुले रहते थे।

ज्योतिबा फूले की रचनाएँ

ज्योतिबाफूले की रचनाएँ निम्नलिखित है।

1. तृतीय रत्न
2. छत्रपति शिवाजी
3. ब्राह्मण का चातुर्य
4. किसान का कोड़ा
5. अछूतों की कैफीयत
6. गुलाम गिरी
7. सार्वजनिक सत्य धर्म पुस्तक

सत्यशोधक समाज

1873 में ज्योतिबा फूले ने सत्यशोधक समाज की स्थापना की इस संस्थान का मुख्य उद्देश्य शूद्र समाज के व्यक्तियों का उद्धार करना तथा उनको ब्राह्मणों के अत्याचार व प्रभुता से उनकी रक्षा करना। इस संस्थान की सदस्यता सभी के लिए खुली हुई थी।

सन् 1876 में सत्यशोधक समाज में 316 सदस्य थे। सन् 1868 में उन्होंने एक सार्वजनिक स्थान टैंक की स्थापना अपने घर के बाहर करवाई तथा सभी लोगों को सम्मान रूप से सम्मान देने का प्रस्ताव रखा महात्मा ज्योतिबा फूले ने अपने पूरे जीवन को अस्पृश्यता से ब्राह्मणों के अत्याचार से बचाने में लगा दिया। 18 NOV 1890 को इस महान आत्मा का मृत्यु हो गया।